ब्रह्मांड की चेतना से साक्षात्कार

अनंत काल से आदिवासियों में एक बात प्रचलित है, कि किसी भी व्यक्ति की मिट्टी की प्रतिमा बनाकर, उसको किसी भी रोग से मुक्त और युक्त किया जा सकता है और तो और उसकी मृत्यु भी उसे भेजी जा सकती है।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक और लेखक रुडोल्फ फ्रैंक ने अपने जीवन के तीस वर्ष इसी बात का अनुसंधान करने में लगाए कि इस बात में कितनी सच्चाई है। अत्यंत संदेह से पूर्ण चित्त लेकर, रुडोल्फ इस बात की पुष्टि करने हेतु कई बर्षों तक अमेज़न के आदिवासियों के बीच रहे। इन वर्षों में उन्होंने यह घटना कई बार घटित होते हुए देखी। चाहे कोई व्यक्ति हज़ारों मील की दूरी पर ही क्यों न हो, उसे विशेष बीमारियों से संक्रमित किया जा सकता था और उस तक उसकी मृत्यु भी भेजी जा सकती थी। वर्षों के अध्ययन और अनुसंधान के पश्चात यह बात सिद्ध हो गयी कि ऐसी घटनाएं घटती हैं।

इस घटना की प्रक्रिया बताते हुए रुडोल्फ अपनी किताब में कई महत्वपूर्ण बातों का वर्णन करते हैं। सबसे प्रथम तो यह कि उस मिट्टी की मूर्ति का व्यक्ति की सूरत से पूर्ण तरह मेल खाना आवश्यक नहीं है। जो व्यक्ति उस प्रतिमा को आकार दे रहा है, उसका मूर्ति में उस व्यक्ति का चेहरा प्रतिष्ठित कर पाना आवश्यक है। इसका अर्थ यह है कि उस व्यक्ति को मन में पूरा स्मरण करके उसको मिट्टी की प्रतिमा पर आरोपित करने से, वह उसका प्रतीक बन, सक्रिय हो जायेगी।

उसपर व्यक्ति का चेहरा प्रतिष्ठित करने की भी एक अलग व्यवस्था है।

मनुष्य के दोनों नेत्रों के बीच, एक तीसरे नेत्र का स्थान है, जो स्वयं में आज्ञा की शक्ति रखता है जिसके कारण उसे संचरण का केंद्र भी माना जाता है। यदि मनुष्य अपनी आँखों के मध्य भाग में अपना ध्यान केंद्रित करे, तो उसके साधारण शब्द भी असाधारण शक्ति लेकर गतिमान हो जाते हैं। यदि किसी व्यक्ति की प्रतिमा को मन में रखकर और उसकी छोटी प्रतिमा को ध्यान में लेकर, आज्ञा के चक्र से, गीली मिट्टी से बनाई हुई मूर्ति पर

फेर दिया जाए, तो वह गीली मिट्टी का लौन्दा साधारण मिट्टी का लौन्दा नहीं रह जाता बल्कि दी गयी आज्ञा से संक्रामित और आविष्ट हो जाता है।

रुडोल्फ ने अपने पूरे जीवन के अध्ययन के बाद यह लिखा है कि जो बात सुनने में अविश्वसनीय प्रतीत होती है, उसके प्रयोग देखकर वे चकित रह गए। वृक्षों की प्रतिमा बना आदिवासियों ने उनके सामने वृक्षों को तत्काल सूखने पर विवश कर दिया। जो वृक्ष कुछ क्षण पूर्व हरा-भरा था, उसके पत्ते अनायास मूर्झा गए और वह वृक्ष मृत्यु की कगार पर पहुँच गया। उसे प्रतिदिन पानी दिया गया, सींचा गया और बाहरी रूप से वृक्ष को कोई हानि नहीं पहुँचने दी, परंतु एक महीने के भीतर ही वह वृक्ष सूख कर नष्ट हो गया।

जो वृक्ष पर हो सकता है, वह मनुष्य पर भी किया जा सकता है। मूर्ति पूजा भी इसी प्रक्रिया का एक विराट आयाम में प्रयोग है। यही कारण है कि भारत में मूर्ति पूजा की प्रथा का प्रारंभ हुआ। यदि इस प्रक्रिया से किसी व्यक्ति को बीमार किया जा सकता है, उसकी मृत्यु लाई जा सकती है, तो जो व्यक्ति मृत्यु के पार जा चुके हैं, उनसे संबंध स्थापित करना भी संभव है। इस प्रक्रिया के माध्यम से मनुष्य, मिट्टी की प्रतिमा बनाकर, ईश्वर के साथ एक आलौकिक संबंध स्थापित कर सकते हैं और इस संसार में जो विराट व्याप्त है उस तक पहुँच सकते है।

अतः मूर्ति पूजा का आधार ही इस बात पर विद्यमान है, कि मनुष्य के मस्तिष्क एवं परमात्मा (ब्रह्मांडीय चेतना) के बीच एक सेतु का निर्माण किया जा सके जिससे मनुष्य साकार के माध्यम से अनादि, अनंत एवं निराकार परमब्रह्म से जुड़ सके।

**** प्रत्येक शुक्रवार को एक नई प्रेरक कथा पढ़िये।****

अधिक प्रेरक लघुकथाओं के लिए हमारा ऐप डाउनलोड करें : Vikram Samvant Hindu Calender